राष्ट्रीय

'मुस्लिम साहित्य' से धर्मांतरण सरकार का नया शिगूफ़ा

यूसुफ किरमानी

मेरे घर में गीता है तो क्या यह हिन्दू साहित्य है?

मेरे पास घर में बाल्मीकि रामायण है तो क्या यह हिन्दू साहित्य है?

मेरे पास सत्यार्थ प्रकाश भी है तो क्या यह हिन्दू साहित्य है?

क्या इनसे मेरा धर्मांतरण कराया जा सकता है? मुझे हिन्दू बनाया जा सकता है। इन किताबों में कहीं नहीं लिखा है कि इसके पढ़ने से किसी का धर्मांतरण हो जाएगा या उसका धर्मांतरण कराया जा सकता है।

धार्मिक पुस्तकों के आधार पर हिन्दू साहित्य और मुस्लिम साहित्य की नई परिभाषा यूपी की पुलिस गढ़ रही है।

यूपी पुलिस ने दिल्ली के जामिया नगर से धर्मांतरण कराने के आरोप में जिन दो लोगों को पकड़ा है, उनके पास मुस्लिम साहित्य बरामद होने की बात कही गई है। ये खबर पुलिस ने अख़बारों में छपवाई है और ताज्जुब है कि मीडिया ने बिना सवाल किये उसे ज्यों का त्यों प्रकाशित कर दिया है।

क्या किसी मुस्लिम का अपने घर में क़ुरान, हदीस और दुआओं की किताब रखना अब इस देश में अपराध माना जाएगा? क्या क़ुरान, हदीस और दुआ की किताबें मुस्लिम साहित्य हैं?

यह सरकार अफ़ग़ानिस्तान में खुद को प्रासंगिक बनाये रखने के लिए दोहा कतर में तालिबानी लड़ाकों से बात कर रही है। इस सरकार के पूर्वज एक आतंकी को तो बाक़ायदा कंधार तक पहुँचा आये थे। उस सरकार की पुलिस भारत में मुसलमानों के घरों में मुस्लिम साहित्य तलाश रही है। कश्मीरी लड़ाकों की धर पकड़ और तालिबानियों से समझौता वार्ता, मुसलमानों के घरों में मुस्लिम साहित्य की तलाश नए जमाने का मोदी-योगी देशप्रेमी कॉकटेल है।

इस्लाम धर्मांतरण के सहारे नहीं फैलाया जाता है। यह बात इस देश की अदालतें और खुफ़िया एजेंसियाँ भी जानती हैं। न ही इस्लामिक संगठन धर्मांतरण कराने का कोई मिशन चलाते हैं।

मुस्लिम साहित्य का टुच्चा आरोप योगी की पुलिस कहाँ से खोज कर लाई है, यह समझ से बाहर है। मेरा दावा है कि योगी और उनकी पुलिस क़ुरान समेत सभी इस्लामिक किताबों का दुनिया के किसी कोने से अनुवाद करा ले, वे उसमें धर्मांतरण या उस जैसे शब्द को तलाशते नहीं कर पाएँगे।

जिन दो लोगों को यूपी एटीएस ने पकड़ा है, उनके बारे में खबर छपवाई गई है कि उन्होंने एक हज़ार लोगों को हिन्दू से मुसलमान बना दिया। ताज्जुब है कि दिल्ली में बैठे एक एनजीओ का इतना बड़ा मिशन कामयाब हो गया और आईबी, सीआईडी, सीबीआई, दिल्ली पुलिस के स्पेशल सेल को इसकी भनक तक नहीं लगी।

जिन एक हज़ार लोगों को हिन्दू से मुसलमान बनाया गया, आख़िर किसी हिन्दू

परिवार ने कहीं कोई एफआईआर दर्ज कराई होगी? कहीं किसी ने कोई सूचना किसी एजेंसी को दी होगी?

कहीं ऐसा न हो कि फिर वही कहानी दोहराई जाए जो कोरोना की पहली लहर में हुई थी। उस समय जिस तरह तबलीगी जमात का हौवा खड़ा किया गया और बाद में सरकार को कोर्ट में फ़ज़ीहत का सामना करना पड़ा और सारी एफआईआर रद्द करनी पड़ीं, वैसा कुछ इस केस में भी न हो। क्योंकि यूपी पुलिस जब कथित मुस्लिम साहित्य को धर्मांतरण के सबूत के रूप में कोर्ट में पेश करेगी तो जज इतने नासमझ तो नहीं होंगे जो क़ुरान और हदीस के बारे में न जानते होंगे कि उनमें क्या लिखा हुआ है?

दरअसल, पुलिस ख़ासकर बहुसंख्यकवाद को बढ़ावा देने वाली पार्टी की सरकारों की पुलिस इस तरह के मामलों को सनसनीख़ेज़ बनाकर मुसलमानों के खिलाफ पेश करती है। ऐसे सनसनीख़ेज़ मामलों की मीडिया खुद न कोई पड़ताल करता है और न सवाल करता है। आरोपी दो-तीन साल जेल में रहने के बाद बाहर आ जाते हैं। वो सनसनीख़ेज़ मामला दफ़न हो जाता है। फिर दूसरा सनसनीख़ेज़ मामला सामने लाया जाता है।

मीडिया के अलावा जनता भी सवाल नहीं करती कि कोरोना काल में ऑक्सिजन, जीवनरक्षक दवाइयों की कालाबाज़ारी, निजी अस्पतालों में बेड के नाम पर लूट खसोट को जो सरकार न रोक पाई हो वो कथित मुस्लिम साहित्य कितने आसानी से तलाश लेती है। यूपी में क़ानून व्यवस्था की स्थिति क्या है, ये क़िसे छिपा है लेकिन वहाँ के मुख्यमंत्री और पुलिस को हिन्दू धर्म मानने वालों की संख्या कम होने की चिन्ता ज़्यादा है।

इस देश के बहुसंख्यकों ने सरकार की प्राथमिकताओं पर सवाल करना छोड़ दिया है। वह सौ रूपये लीटर पेट्रोल ख़रीदकर राज़ी है लेकिन इस बात पर खुश हैं कि योगी-मोदी उसका धर्म बचा रहे हैं। लेकिन क्या वाक़ई कोई सरकार या पुलिस धर्म बचा पाई है? औरंगज़ेब के शासनकाल में क्या पूरा देश मुसलमान बन पाया था?

जब 800 साल तक मुगलकाल और अंग्रेजों के 200 साल में इस्लाम और ईसाई धर्म भारत के मुख्य धर्म नहीं बन पाए तो अब कैसे संभव है कि कोई अल्पसंख्यक समुदाय कथित मुस्लिम साहित्य से एक हज़ार हिन्दुओं का धर्मांतरण करा देगा? फिर भी बहुसंख्यक जनता अगर योगी-मोदी के इन टोटकों से खुश हो रही है तो इसमें दोष जनता का ही है।

जो लोग हिन्दू धर्म छोड़कर बौद्ध बन रहे हैं, उन्हें मोदी-योगी की सरकार रोक नहीं पा रही है। बाबा साहब आंबेडकर के बौद्ध धर्म अपनाने की बात पुरानी हो गई। मोदी राज में रोहित वेमुला के परिवार ने हिन्दू धर्म को लात मारकर बौद्ध धर्म अपना लिया, उन्हें कोई भगवान नहीं रोक पाया।

जो सरकार, उसकी पार्टी और संगठन मनु स्मृति को पैरों तले रौंदे जाने को न रोक पाये हों वो हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए मुस्लिमों के घरों में मुस्लिम साहित्य खोज रहे हैं।

हिटलर भी लाखों यहूदियों का क़त्ल करने के बाद एक पार्टी, एक भाषा, एक धर्म का राज्य स्थापित नहीं कर पाया था। उसके गैस चैंबर हिब्रू भाषा को ख़त्म नहीं कर पाये।

यूपी में क़ानून की आड़ लेकर निर्दोष लोगों पर यह ज़ुल्म की इन्तेहा है। इसका विरोध जायज़ है। मैं फिर से दोहरा रहा हूँ कि ऐसे ज़ुल्म का विरोध हर देश, काल और परिस्थिति में सभी तरह से जायज़ है।

(यूसुफ किरमानी वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक हैं)

मिलार्ड, हमसे न हो पाएगा, 4 लाख न दें पाएंगे !

लक्ष्मी प्रताप सिंह

सुप्रीम कोर्ट में मोदी सरकार ने हलफनामा देकर कहा है की कोरोना में मरने वाले लोगों को 4 लाख का मुआवजा नहीं दिया जा सकता। इसपे सरकार ने बहाना दिया है की ऐसी बीमारी में मुआवजा नहीं देंगे जो अभी भी चल रही है दूसरा बहाना राज्य और केंद्र की सरकारों के पास पहले ही पैसा नहीं है उस पर ऐसा मुआवजा देना ठीक नहीं है।

सरकार का ये बहाना एकदम झूठ है। चार दिन पहले ही रिपोर्ट आयी है की इस साल सरकार ने पिछली साल से दो गुना टैक्स/कर वसूला है। तो जब सरकार की कमाई दुगनी हुई तो कमी का बहाना किस आधार पर दिया गया ?

पीएम केयर फंड में जो लाखों करोड़ इकठ्ठा किया गया वो क्या सिर्फ विधायक खरीदने के काम में ही आएगा?

अब इसका असली कारन समझिये- असल में सरकार ने कोविड 19 से मरने वालों की संख्या कम बताई है जबकि असल में मौतें ज्यादा हुयी हैं। उदाहरण के लिए मोदी जी के गुजरात मोडल में चल रहे एक गुजराती दैनिक अख़बार "दिव्य भास्कर" ने खबर छापी की मात्र 71 दिनों में सरकार ने 1.23 लाख मृत्यु प्रमाण पात्र जारी किये जबकि उसी दौरान कोरोना से मरने वालों की संख्या मात्र 4,218 बताई थी।

ये तो सिर्फ गुजरात का हाल था पूरे देश की बात करें तो आंकड़ा करोड़ पे पहुँचता है। अब यदि सरकार मुआवजा देगी तो कोरोना से मरने वाले लोगों के परिजन मृत्यु में कोरोना दर्ज करवाके मुआवजा लेंगे और कोरोना से मौतों की संख्या और मुआवजा देने की संख्या में जो अंतर आएगा उससे कोरोना द्वारा हुयी मौतों का असली आंकड़ा खुल जायेगा।

अपनी कमजोरी और नाकामयाबी छुपाने के चक्कर में मोदी सरकार इस विषम परिस्थिति में भी लोगों की मदद नहीं कर रही है। फिर वो कौन लोग हैं जो आज भी मोदी को सपोर्ट करते हैं ?

इसे छिपाने में मददगार कौन

इस प्रावधान के बारे में कैसे मालूम होगा? सरकार ने या मीडिया ने कभी ऐसा बताया ही नहीं।

सरकार की नीयत कभी कोरोना का मुवावजा देने की थी ही नहीं।

इसका सबूत है मोदी ने इस प्रावधान के बारे में देश को कभी नहीं बताया जबकि वो पिछले डेढ़ साल में टीवी पर कई संबोधन कर चुके हैं।

दूसरा सबूत है मृत्यु होने की स्थिति में मृत्यु का कारण कोरोना नहीं लिखा जाता, कार्डिएक अरेस्ट या कोई अन्य बीमारी बताया जाता है। जबकि इलाज कोरोना का ही चल रहा होता है, पैसा कोरोना के नाम पर ही लूटा जा रहा होता है। उन्हें पता है मृत्यु का कारण कोरोना लिखने पर मुवावजा देना पड़ सकता है।

जरायमपेशा सियासतदानों से बचने का समय

डॉ सलमान अरशद

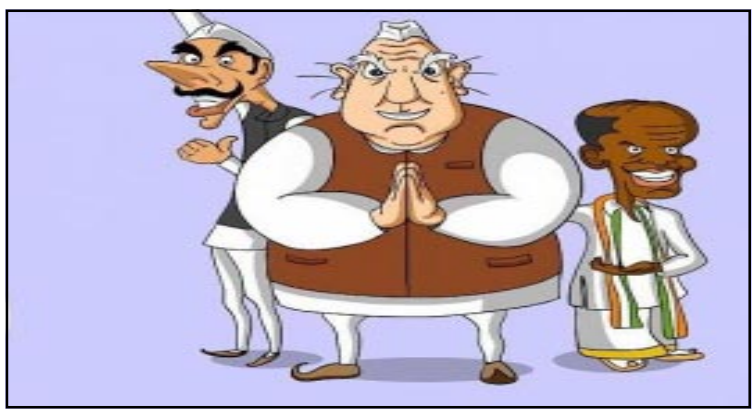

इस मुल्क़ में हिन्दू मुसलमान की सियासत की उम्र सौ साल से ज़्यादा हो चुकी है। आज़ादी के बाद लगातार मुसलमान इस सियासत की बेदी पर मारा जा रहा है। अभी ये सिलसिला लंबा चलेगा इसमें कोई शक नहीं है। इधर पिछले 10 सालों में इस सियासत ने गाँवों तक में पैर पसार दिया है। गाँवों में दिलों के बीच दीवार टेम्परेरी नहीं हुआ करती, ये दीवार किसी भी वजह से बने, मज़बूत और टिकाऊ होती है। इस लिहाज़ से ज़रायमपेशा सियासतदानों के लिए ये खुशी की बात है लेकिन, जो एक अमनपसंद मुल्क के तलबगार हैं उनके लिए ये खतरनाक मुस्तकबिल का इशारा भी है। बढ़ते आर्थिक हालात में इस सियासी तबाही को और बढ़ावा दिया जाएगा।

जो लोग इस सियासत के कलपुर्जा बन रहे हैं उन्हें बस याद दिलाना चाहता हूँ कि आज़ाद भारत में मुसलमानों पर साम्प्रदायिक सियासत के हमलों का मुकाबला मुसलमानों से ज़्यादा हिन्दू पृष्ठभूमि के अमनपसंद लोगों ने की है। उनकी तादात भले ही कम रही हो लेकिन उनका हौसला उनकी तादात पर हमेशा ही भारी रहा है।

पिछले सात सालों में मुसलमानों के सिविल राइट के लिए लड़ने वाले सारे बड़े नाम हिन्दुओं के हैं। साजिशों के तहत मुकदमों में फसाये गए मुसलमानों के लिए लड़ने वालों में भी बड़े नाम हिन्दुओं के हैं। इसी तरह पूरे कोरोनकाल में लोगों की इमदाद जिसमें खाना, पानी, दवा, ऑक्सीजन और मरने वालों की अंतिम क्रिया सब शामिल है, में मुसलमानों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया है।

इसका नतीजा क्या निकलता है ?

ज़रायमपेशा मज़हबी रहनुमा वो मुसलमान हों के हिन्दू, आम मुसलमानों व आम हिन्दुओं की रहनुमाई नहीं करते। यह कि, इंसाफ और अमन के तलबगार बेहतर इंसान सभी धर्मों में हैं, सभी जातियों में हैं। टीवी पर हो रही बहसों या आई टी सेल के प्रोपेगैंडा से आम मुसलमानों या आम हिन्दुओं की पहचान न करें।

नफ़रत की सियासत पर कई दहाइयों से मेहनत हो रही है, ज़ाहिर सी बात है कि इसका असर भी हुआ है, लेकिन यहीं ये एक बड़ी जिम्मेदारी है कि आप इस असर से बचें, अपने आसपास के लोगों को बचाएं। इसके लिए ज़रूरी है कि एक धार्मिक समूह के रूप में हिन्दू या मुसलमान से नफ़रत करने से बचें। हलांकि ये आसान नहीं है लेकिन ये ज़रूरी ज़रूर है। सियासी साजिशों के ख़िलाफ़ जो लोग खड़े हैं वही इस मुल्क़ के मुस्तक़बिल हैं।

सोचियेगा !

कुएं का मेढक : एक कथा

मो. सीमाब ज़मान

आषाढ़, हिंदी का चौथा महीना अधिया रहा था। मॉनसून दस्तक दे रहा था, मेढक निकल पड़े थे।अचानक बादल क़ड़का, बिजली चमकी और एक मेढक जो एक कुएं के किनारे टहल रहा था वह कुएं में गिर गया।

वहां उसकी मुलाक़ात मेढकों के मुखिया गोलकर जी से हुई, जो मेढक समाज पर चिंतन कर रहे थे और धाराप्रवाह बोल रहे थे। यह बाहर का मेढक भी चुपचाप उनका भाषण सुनता रहा। वह बोला बाहर की दुनिया बहुत बड़ी है।

गोलकर जी ने पूछा इस दुनिया (कुआँ) की एक चौथाई है, उसने कहा नहीं। फिर गोलकर जी ने कहा इस दुनिया की आधी, फिर उसने कहा नही। गोलकर जी ने फिर कहा इसका दो-तिहाई , उसने कहा नही। गोलकर जी ने गुस्से में दूसरे मेढक को कहा इसको नीचे ले जाओ और कीचड़-कादो चटाओ, यह बाहर की दुनिया भूल जायेगा।

फिर पूरा कुआँ अंधकार में बदल गया। जब दूसरे दिन रौशनी नज़र आई तो उस मेढक ने एक लोटे के आकार का बर्तन कुएं में रस्सी से लटका देखा जो कुएं से पानी लेकर चला गया। दूसरे दिन जब फिर लोटा कुएं में पानी लेने आया तो वह मेढक उछल कर लोटे में चला गया। मगर मुखिया जी ने उसकी टाँग पकड़कर लोटे से बाहर निकाल लिया।

मुखिया जी ने कहा, तू कहां चला? यह जो बाकी मेढक हैं, वे भी बाहर से आये थे और कहते थे कि दुनिया बहुत बड़ी है। मगर मेरे धारा प्रवाह भाषण सुनकर ये लोग सब भूल गये और इसी कुएं के होकर रह गए। मुखिया जी को डर हो गया अगर यह भागा तो बाकी भी भागेंगे और दुनिया की सच्चाई जान जायेंगे तो फिर मेरा क्या होगा? फिर अगले साल जेठ का महीना आया। महामारी हुई। पानी की क़िल्लत होने लगी। कुआँ सूखने लगा।"स्प्रिंग वाटर" का दाम दुनिया मे 72-73 से बढ़ कर दोगुना 140-150 हो गया। कुएं के मेढक उछल उछल कर लोटे में जाने लगे। कुएं में मेढक की तादाद कम हो गई और कुछ दिन बाद मुखिया जी के प्राण पखेरू उड़ गये। फिर कुएं में भूत का बसेरा हो गया और दुनिया बहुत सुंदर हो गई।